आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:04-03-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का रास्ता बतलाने वाले, पतित-पावन बेहद के सत-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सत का संग ज्ञान मार्ग में ही होता है, अभी तुम सत बाप के संग में बैठे हो, बाप की याद में रहना माना सत संग करना.

भक्ति मार्ग में हम आत्माओं ने अलग-अलग प्रकार के कई साधु-संतों के सत्संगों में गये होगे और उसे हमारे मन को थोड़े समय के लिए शांति का अनुभव भी हुआ होगा. लेकिन उस भक्ति मार्ग के सत्संगों से हमारी आत्मा में परिवर्तन नहीं आता. आत्मा जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्त होकर, तमोप्रधान से सतोप्रधान नहीं बनती. अभी पुरुषोत्तम संगमयुग में सत्य बाप स्वयं इस धरा पर आकर हम भाग्यशाली आत्माओं का संग करते हैं. हमारी आत्मा में दिव्य-गुणों और शक्तिओं का बल भरते हैं. हमें अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराते हैं. वह सत बाप, हमारा बाप बनकर ईश्वरीय पालना का सुख देता है और २१ जन्म स्वर्ग का वर्सा देते है. सत टीचर बनकर हमें ईश्वरीय पढ़ाई से पदमापदम भाग्यवान बनाते है. और सत गुरु के रुप में श्रेष्ठ बनने के लिए ईश्वरीय श्रीमत् देते है, वरदानों से हमारा श्रृंगार करते है और फिर हमारी आत्मा को गुल-गुल बनाकर अपने साथ परमधाम ले जाते हैं. हम भाग्यशाली आत्माओं को ही सारे कल्प में सच्चे सत-संग का लाभ मिलता हैं.

बाबा की आज की मुरली से बाबा की याद यानी बाबा का संग सदा के लिए अनुभव हो, ऐसे महा-वाक्यों को निकालकर बार-बार पढ़ेंगे.

बाबा कहते हैं मीठे बच्चे, सत-संग में बैठे हो. इस सत के संग में कल्प-कल्प संगम पर ही तुम बच्चे बैठते हो. यह सत-संग होता ही ज्ञान मार्ग में हैं. तुम आत्मायें सत बाप के संग में बैठी है. और कोई जगह आत्मायें परमपिता परमात्मा के संग में नहीं बैठती.

बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग के सत-संग में तो बच्चे देह-अभिमान में रहते हैं. यहाँ तुम समझते हो हम आत्मा है, सत बाबा के संग में बैठे हैं. यहाँ तुम देही-अभिमानी होकर बैठे हो. कोई भी देह-अभिमानी मनुष्य सत बाप के संग में बैठ नहीं सकता.

बाबा कहते हैं सत का संग - यह नाम भी अभी ही है. इसका यथार्थ रिती अर्थ भी है कि तुम आत्मायें परमात्मा बाप जो सत्य है उनके साथ बैठी हो. वह सत बाप, सत टीचर, सत गुरु हैं.

बाबा कहते हैं बाप भले मधुबन में बैठे है और तुम आत्मायें अपने घर में हो. परन्तु अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करते हो तो जैसे सत बाप के संग में बैठे हो. बाप को याद करने से ही जन्म-जन्मांतर के तुम्हारे विकर्म विनाश होगे.

बाबा कहते हैं मैं सारे कल्प में एक ही बार आता हूँ. अभी तुम्हारा संग हुआ है सत बाप के साथ, जिसे तुम आत्मायें तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो. सतोप्रधान को ही गॉल्डन एजड कहा जाता है. अभी आत्मा का परमात्मा के साथ संग होने से तुम २१ जन्म के लिए पार हो जाते हो.

बाबा कहते हैं हे आत्मायें, मुझ बाप को याद करो, मेरा संग करो. मैं जन्म-मरण से न्यारा हूँ. मुझे ब्रह्मा के शरीर का आधार लेना पडता है. अभी तुम बच्चों का संग है सत के साथ. सत बाप को निरंतर याद करना हैं. जितनी ज्यादा आत्मायें सत बाप को याद करती है उतना आत्मा को फायदा है, विकर्म विनाश होता हैं.

बाबा कहते हैं आत्मा को सत का संग करना है. आत्मा भी वन्डरफूल है, परमात्मा भी वन्डरफूल है, दुनिया भी वन्डरफूल है. यह दुनिया कैसे चक्र लगाती है, वन्डर है. तुम सारे ड्रामा में आलराउन्ड पार्ट बजाते हो. तुम्हारी आत्मा में ८४ जन्मो का पार्ट नूंधा हुआ - यह भी वन्डर है.

बाबा कहते हैं आत्मा को मेरा संग मिलने से आत्मा बहुत बलवान बन जाती है. बाप वर्ल्ड ऑलमाईटी ऑथोरिटी है ना, उन द्वारा तुम को बल मिलता है. फिर ईश्वरीय पढ़ाई से भी बल मिलता है. जिसे तुम सारे विश्व पर हुक्म चलाते हो. जैसे बाप ऑलमाईटी है, वैसे तुम भी ऑलमाईटी बनते हो. सारे विश्व पर राज्य करते हो. तुम से तुम्हारा राज्य कोई छिन नहीं सकता. जितना तुम बाप को याद करेंगे और चक्र को घुमायेंगे उतना तुम्हारी आत्मा में बल भरता जायेगा.

ॐ शांति.